डिजिटल युग में वरिष्ठ नागरिकों की उभरती हुई भूमिका

वर्ष 2011 में सेवामुक्त होने के उपरान्त मैं बहुत प्रसन्न था कि अब मैं अपनी पसन्द के अनुसार जो चाहता हूँ **वह** कर पाऊँगा। मैनें सांचा कि प्रति सप्ताह 2 दिन अध्यापन को समर्पित करूंगा, एम0एच0आर0डी0/ए0आई0सी0टी0ई0 का कार्य करूंगा, एक दिन एस0एम0एफ0/आई0आई0एम0 जैसा परोपकार का कार्य करूंगा। रविवार को पूर्णतया कार्य मुक्त रखूँगा।

मैंनें तीन माह तक इसी प्रकार कार्य किया परन्तु तदुपरान्त मुझे कई रोगों ने घेरना शुरू कर दिया , उनमे से प्रमुख है घुटनों के दर्द और हार्ट में भारीपन। किसी प्रकार मैंनै परामर्श देने का कार्य समाप्त किया। धीरे–धीरे और रोगों ने भी मुझे घेरना शुरू किया और 2014–15 आने तक मैं 10 रोगों से ग्रसित हो चुका था। जिसमें प्रमुख रूप से आँखों में रक्त स्त्राव कर्ण क्ष्घेण, रूप स्पांडिलाइटिस, प्रोस्टेट , बढ़ी हुई आन्तरिक शुष्कता (खुश्की) के कारण रक्तस्राव और उच्च रक्त चाप से भी मैं ग्रसित हो गया। परिणामस्वरूप मेरी समस्त शैक्षणिक गतिविधि लगभग समाप्त हो गयी। अन्त में मुझे घुटने का आपरेशन कराना पड़ा। अपने पैरों पर खड़े होने में मुझे लगभग पूरे 6 माह लग गये।

इसी दौरान हार्निया की समस्या सामने आ गयी। **सामान्यतः** यह एक साधारण आपरेशन है परन्तु यह एक बुरा सपना जैसा हो गया और मुझे चार महीने तक इतने भयंकर दर्द का सामना करना पड़ा कि मैं आने वाले दिनों में भगवान से प्रार्थना करने लगा कि यदि वो मुझे वापस बुलाना चाहते हैं तो जल्दी करें, कष्ट क्यूं दे रहे हैं? एक रात मुझे ऐसा लगा कि प्रकृति किसी ऐसी चीज को नहीं लेती जो उसके उपयोग वाली नही होती है। 'क्या अभी भी कुछ बचा है जो मुझसे होना है, मैं अचम्भीत था ।

मुझे याद आता है कि मैं बहुत पहले मैनें अपने छात्रो से एक किताब लिखने का वादा किया था परन्तु मुझे कभी अवसर नहीं मिला कि मैं न्याय कर पाऊँ। यह भी मेरा एक सपना था कि एक एकेडमी संसाधन पार्क बनाया जाए जिसका सपना 1994 में आईआईएम, लखनऊ के एक भावी प्लान को बनाते समय देखा था। "यह ऐसा है जिसे मैं कर सकता हूँ।" "मैंने सोचा परन्तु तभी मेरे हाथों के जोड़ दर्द करने लगे। ,जिसके कारण मैं अपनी इच्छानुसार लिखने या टाईप करने की स्थिति में नहीं रहा। मैं लैपटॉप पर भी 15–20 मिनट से ज्यादा नहीं देख सकता था क्योंकि उसके बाद मेरे नजर धुँधली पड़ जाती थी और स्पाँडिलाइसिस दर्द भी शुरू हो जाता था। मेरे पास आफिस और सहायक दोनों का ही सहारा भी नहीं था।

बुढ़ापा और डिजिटलाइजेशन

बुढ़ापा अपने साथ बहुत सारी शारीरिक असमर्थताओं को लेकर आता है। परन्तु इसके अपने बहुत फायदे भी है। व्यक्ति के पास बहुत सा टाईम होता है, इच्छानुसार चीजों का कर सकता है। परन्तु इसकी कुछ सीमायें भी होती है, व्यक्तियों को अक्सर रात में नींद नहीं आती है, घटता आर्थिक भार यदि परिवार पूरी तरह बसा हुआ है लेकिन व्यक्ति अक्सर अकेला होता है और उसका मन करता है कि वह छोटे बच्चों के पास चला जाये जो दूर रह रहे हैं। घर पर चेक बुक/लेटर्स को लेने ने लिये कोई नहीं

होता क्योंकि पत्नी साथ में होती है। कभी–कभी व्यक्ति इस स्थिति में नहीं होता है कि वह अकेले बैंक जाकर पैसा निकाल ले अथवा बिल्स का निस्तारण कर सके।

भाग्य से डिजिटाइजेशन कई रूपों में फैल रहा है उच्च रिजोल्यूशन वाले स्मार्ट मोबाईल्स फोन, ब्राडबैण्ड / वाई फाई सुविधाओं की उपलबता इत्यादि। यद्यपि इन सबके साथ अनेकों सीमायें है। डिजिटाइजेशन इधर उधर जाने और बिना अपने शहर में रहे कई चीजों की हैन्डलिंग में सहायक होती है जो हम सभी जानते है। परन्तु क्या डिजिटल युग हम सभी के लिए किसी भी रूप में उपयुक्त है? मेरा मानना है कि इसके माध्यम से कई चीजें की जा सकती है (ऐसे काम जो सामान्यतया सेवानिवृत्ति से पहले करना सम्भव नहीं होते हैं) जैसे दादा–दादी, नाना–नानी की भूमिका निभाना, भावी पीढ़ी के प्रयासों को सहारा देना ।

प्रत्यक्ष अनुभव, असमान्य परन्तु उपयोगी अनुभवों के आधार पर साहित्य विकसित करना।

फिर भी, यहाँ वहाँ मैनें कुछ लिखना शुरू किया, जब भी कोई विचार आया, चाहे बाथरूम में, आधी रात में (जब नींद न आ रही हो), फ्लाईट के लिये इन्तराज करते हुए या ट्रेन से यात्रा करते समय। कोई जल्दबाजी नहीं कोई चिन्ता नहीं थी। जब कुछ पन्ने लिख लेता तो उनकी फोटो खींच लेता या स्कैन कर लेता और ऐसे किसी व्यक्ति को ईमेल कर देता जिसका नाम सबसे पहले दिमाग में आता। यह कोई भी हो सकता था जैसे आई0आई0एम0 लखनऊ या कोजीकोड को पूर्व सचिवयी सहायक, एक प्रोफेसर या किसी प्रबन्ध संस्थान का डायरेक्टर। मैं जबलपुर, कानपुर, पूणे या लखनऊ के कुछ विश्वसनीय साइबर कैफे चिन्हित करने में भी सफल हुआ जिन्हें ऑनलाईन भुगतान करना भी सम्भव था। मैं स्वतः संपादन करता और जीरोक्स की दुकान से प्रिन्ट ले लेता। इस तरह से इस पुस्तक के कुछ अध्याय, पांच से ज्यादा शोध पत्र, 25 छोटे और बड़े केस तैयार किये।

पिछले अनुभवों और ऐसे प्रलेखों को तैयार करने से मुझे भारतीय संगठनों और भारतीय नागरिकों–भारत के हनुमानों–की कार्यशैली को अन्दर से समझने का अवसर मिला। इससे मुझे यह भी यकीन हो गया कि धमकियाँ चुनौती और कमजोरियाँ मानसिक ताकत होती है। बाधाओं को दूर करने और मानव शक्ति की पुर्नसंकल्पना (दो शब्द विकास और विविधता का प्रबन्धन करने के लिए) और संसाधन (सम्पत्तियाँ और देनदारियाँ) चेक लिस्टिंग प्रबन्ध की एक विधि, विकास एक पसन्द का विषय, संगठन से व्यवसाय की व्यवहार्यता सुनिश्चित करने की विधियों,विभिन्न अंशधारियों के सहयोग से लाभ,स्वायत्ता प्राप्त करना इत्यादि इन सबके कारण मैं छोटी कहानियाँ लिख पाया ।

यह छोटी कहानियाँ छोटे केसेज के रूप में कक्षा का मन लगाने में सार्थक भूमिका निभा सकते है, जिससे आगे की चर्चा की जा सके ।

इसी प्रकार की घटना बडे केसज जैसे किंगफिशर एयरलाइन्स, अड़ानी इन्टरप्राइजेज इत्यादि के साथ भी घटी है। केसेस ने एस0एम0 के क्षेत्र में अनेकों अवधरणाओं को परिष्कृत भी किया जैसे राजनीतिक पटरी से उतरना। सबसे ज्यादा प्रफुल्लित करने

वाला अनुभव यह है कि एक नोट को तैयार करना जबकि मैं एक अस्पताल में सात दिनों के लिये स्वास्थय लाभ कर रहा था, यह नोट एक व्यवसाय की कार्य शैली का अन्दरूनी रूप प्रस्तुत करता है जब वह लालच की लक्ष्मण रेखा पार करता है।

मैनें अपने द्वारा लिखे गये केसेस धीरे–धीरे संकलित करना शुरू कर दिया, केसस, उनको एक आर्डर में रखा एक प्रारूप दिया ताकि स्ट्रेटेजिक मैनेजमेण्ट के केसबुक पर पांच खण्ड विकसित किये जा सके। इस केस बुक से केस विश्लेषण गाईड को विकसित किया गया जिससे फेकल्टी सदस्यों को अपने उद्देश्य के लिए केसेज् का चुनाव किया जा सके।

वेब उपयोगः

केसस की साफ्ट कापी उपलब्ध होने पर मैनें उन्हें लखनऊ में अपने उपयोग के लिये किराये पे ली हुई वेब साईट पर डालना प्रारम्भ कर दिया। मैनें वेबसाईट को अपरिष्कृत रूप में चलाना सीख लिया था। जब मैं स्ट्रेटेजिक मैनेजमेण्ट फोरम को चलाता था। यद्यपि ये एच0टी0एम0एल फार्मेट में है। बहरहाल यह एक स्टोर हाऊस बन गयी और कोई भी व्यक्ति कोई भी केस या अध्याय शीघ्रता से डाऊनलोड कर सकता था। ताकि सभी सहभागी इसे पढ़ सके और चर्चा के समय एक ही तरंग दैर्ध्य पर रह सके। समय–समय पर अतिरिक्त सूचनायें भी डाउनलोड की जा सकती थी।

यह वेबसाईट छोटे (संक्षिप्त) केस लिखने का अवसर प्रदान करती है जिसे क्लास में चर्चा के आगे बढ़ने के समय अतिरिक्त तथ्यों और नोटस के साथ और अधिक विकसित किया जा सकता है।

एक रिजल्ट के रूप में यह हमें अवसर देता है कि एक लम्बे, समृद्ध केस को छोटे केस में कुछ दृश्यों और सूचनाओं के आधार पर बॉट ले और तब क्लास में उस पर चर्चा करें।

कुछ समय उपरान्त, इस वर्ष मई में अपनी प्रिंटर कार्टिज को रिफिल के लिये बाजार गया वहाँ मैनें देखा कि विक्रेता वेब डिजाईन में माहिर है और 'पी0एच0पी' फार्मेट में वेब साईट बनाना जानता है जो कि यूज करने वालों के लिए ज्यादा आसान है। एक बार मेरी 'एचटी0एम0एल0' साईट बन्द हो गयी और मैं बुरी तरह फंस गया। तब मैनें एस व्यक्ति की मदद ली और एक साईट रविशंकर (ehaikk.in) ली और उसे चलाना सीखा और संशोधित किया ।

इस प्रकार मैं दो वेबसाईट को एक साथ उपयोग में ला सका, दोनों एक दूसरे के बैंकअप के रूप में कार्य करती है।
`बसाइट से केसेज, गद्य, शोध पत्र इत्यादि को एक स्थान पर आसानी से उपलब्ध कराने और विश्व के किसी भी कोने से उस तक पहुँचने में मदद मिली है।

वेबसाईट ने मुझे एस0एम फैकल्टी और छात्रों को मेरे द्वारा लिखा गया मेमोरियल बिना प्रकाशक की आज्ञा से इस्तेमान करने, कम दाम पर उपलब्ध कराने, जरूरत पड़ने पर फ्री वितरित करने में सहायता की है।

प्रिन्टिंग और प्रकाशन

मैं मैटीरियल को ए–4 साइज में जिरौक्स कराता था और स्पाईरल रूप में बंधवाता था। यद्यपि इस रूप में बंधा हआ मैटीरियल काफी भारी होता है और उसे एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाना मुश्किल हो जाता है। अतः हम सब ने मिलकर सारे केसेज और किताब को 18 पार्ट में बांटा और फिर उसे (ए4/2 साईज) बुकलेट के रूप में बदला। मैं बाइंडिंग का काम खुद किया जिसे मेनें अपने आफिस अटेन्डेन्ट से सीखा था , जब मैं डीन था। इसका परिणाम यह हुआ कि भारी ए4 साईज खण्ड आसानी से हाथ में ले जाना वाला बन गया। मैनें बडी किताब को 100–150 पन्नो वाली ए4/2 साईज में विभाजित कर दिया। उसके बावजूद प्रिन्टेड मेटैरियल की भारी मात्रा मुझे ले जानी पड़ती थी जब भी मैं लखनऊ से दिल्ली या बैंगलोर जाता था, जो मुझ जैसे व्यक्ति के लिए काफी मुश्चित काम था क्योंकि मैं खुद ही दूसरे व्यक्ति द्वारा ले जाया जाता था।

अंत में मैनें धीरे–धीरे सारा मैटीरियल वेबसाईट पर लोड कर दिया और जहाँ जाता था वहाँ प्रिन्टर ले जाता था, ताकि मेरा काम न रूके।

गुडगांव में मैनें अपनी किताब की प्रिन्टिंग और बाइडिंग साफ्ट कवर बुक फार्म मं करने की सम्भावनाओं को तलाश, उस व्यक्ति के साथ जो कि मैटीरियल की जीरौक्स करता था और मुझे मेरे घर डिलीवर करता था। इसका कारण यह था कि मैं डी0आई0एस0एच0 (एक बीमारी) के एडवांस स्टेज पर था जिसमें इतने चक्कर आते है कि घर में ही ईधर से ऊधर जाना मुश्किल होता है। मैनें लखनऊ, मेदान्ता गुरूगांव, मनीपाल अस्पताल और नारायण हृदयालय, बैंगलोर को सम्पर्क किया परन्तु कोई पॉजिटिव रिजल्ट नहीं निकला मैनें जिन्दगी जीने की आशा छोड़ थी थी। भाग्य से मुझे एक एक्यूप्रेशर स्पेशलिस्ट मिल गये जिन्होनें मुझे मेगनेट उपचार की सलाह दी जिससे मेरी तबियत में सुधार हुआ।

जीरॉक्स में मदद करने वाला व्यक्ति मेरा मित्र बन गया और उसने यह वायदा किया कि व मेरे लिये कूरियर से डिलीवरी में सहायता करेगा जब भी मैं चाहूँगा। मुझे बस उसे साफ्ट कॉपी भेजनी होती थी। शेष कार्य वह करेगा और मैं इलेकट्रानिक माध्यम से भुगतान करने का कार्य करूँगा।

जब मैं बैगलोर में अपनी कालोनी के आसपास टहल रहा था तभी मैने फ्रैंच, जर्मन और स्पेनिश सीखने वाला एक पोस्टर देखा। मैने अमुक व्यक्ति से मित्रता करली, उसने मुझसे वादा किया कि मेरी एक कहानी को तीन भाषाओ में अनुवाद कर देगा। गुगल के सहयोग से मैने एक केस का हिन्दी अनुवाद कर लिया। धीरे–धीरे वह कहानी जो

हिन्दू अखबार मे छपी थी उसका बाद में 12 भाषाओ मे अनुवाद किया गया और बेवसाइट पर उसे लोडकर दिया गया।

मेरे अनुवादक मित्र ने बाद मे सभी 25 कहानियों का अनुवाद तीन विदेशी भाषाओं मे कर दिया। उस प्रकार (टेल्स आफ गाडफादर) कहानियाँ पाँच भाषाओं में उपलब्ध हो गयी।

कहानी की किताब पाँच भाषाओ मे देखकर, जिसमें से तीन भाषाये भारत मे बोली नही जाती, मै महसूस करने लगा कि किताब अन्य देशो मे भी पढी जानी चाहिए। इसलिए मैने किताब के लिए आई एस बी एन नम्बर प्राप्त किया और उसे अर्न्तराष्ट्रीय पाठकों के लिए वेबसाइट पर डाल दिया। इसी प्रक्रिया में मुझे पता चला कि आई एस बी एन (एम एच आर डी) स्व0–प्रकाशन की स्वतन्त्रता भी देता हैं। इसीलिए मैने **स्व–प्रकाशन** का रास्ता अपनाया ताकि मैं व्यवसाय केन्द्रित प्रकाशको पर निर्भर रहे बिना अपनी किताब को सभी लोगो के पढने के लिए उपलब्ध करा सकूँ।

कुछ समय उपरान्त मैने एक जिरोक्स करने वाले व्यक्ति को तलाशा और मुझे मिल भी गया जो कम लागत पर ई–बुक्स प्रिन्ट कर सकता था। इससे वी आई पी लोगों के लिए कस्टमाअज्ड़ कापी छापने की मेरी जरूरत पूरी हो गयी। मैने ई–बुक और पेपर बैक दोनों रूपो मे प्रकाशन के लिए पुस्तको को प्रारूपित करना भी सीखा।

आई आई एम की संयुक्त **सामान्य वेबसाईट**

आई0आई0एम0 के एक निदेशक के रूप में मुझे अक्सर अन्य संस्थाओं के विशेषज्ञों की आवश्यकता होती थी। इसके अलावा कई अन्य लोग भी मुझसे विभिन्न उद्धेश्यों के लिए आई0आई0एम0 के बारे में पूछते थे। प्रत्येक आई0आई0एम0 का एक अलग आई पी पता होता था और उसे याद रखना कठिन होता था। इसके कई अन्य शैक्षणिक और गैर–शैक्षणिक उपयोग सम्भव थे। इसलिए मैंने तत्काल संदर्भ के लिए सम्बधित वेबसाईट पर उपलब्ध सूचना–लिंक से सभी आई आई एम की एक सामान्य वेबसाईट तैयार की। अब किसी को एक वेबसाईट का पता iimsworld.in या सिर्फ एक वेबसाईट का पता www.ekhikk याद रखना होगा, जहाँ कोई भी किसी भी आई आई एम की वेबसाईट पर जा सकता है।

जब मेरे कार्य का अनुवाद हो रहा था, तो मैने सोचा कि बढते हुए आई आई एम परिवार के बारे में गैर–इंगिलश भाषी व्यक्ति को भी जानना चाहिए। इसीलिये, मैने कामन वेबसाईट को विश्व के फायदे के लिए छह भाषाओं में अनुवाद करवाया।

2011 में भारत के सर्वोच्च न्यायालय के 2 जी घोटाले के फैसले और 2012 में कोयला ब्लॉक आवंटन पर सीएजी रिपोर्ट के बाद सामाजिक कार्यकर्ता अन्ना हजारे द्वारा एक आंदोलन शुरू किया गया था। संसद में तीखी बहस शुरू हो गयी और केन्द्र सरकार पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाये गये। यह एक जबरदस्त झटका था। क्या मंत्री झूठ बोल रहे हैं? तथ्यों की जाँच करने का कोई तरीका नही था। कोयला मंत्री कह रहे थे कि

इसमें उनकी कोई भूमिका नही है और उनके कार्यकाल में कोई कोयला ब्लाक आंवटित नही किया गया है। एक दिन मैं कोयला मंत्रालय की बेबसाईट पर पहुँचा और यह देखकर दंग रह गया कि उनके समय में 4000 मीट्रिक टन से अधिक कोयला ब्लाक आवंटित किये गये थे। मै आश्चर्य चकित था। यह जानकारी कोयला मंत्रालय की वेबसाईट पर उपलब्ध थी। आगे के विश्लेषण से पता चला कि आवंटन में बड़ी मनमानी की गयी थी। सरकारी खजाने को हुए नुकसान को लेकर सीएजी का आंकलन चौंकाने वाला था। लेकिन इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह है कि मेरा विश्लेषण यह दिखा रहा था कि नुकसान बहुत अधिक था। खजाने को होने वाले नुकसान के अनुमानों में अंतर का विश्लेषण करने का कोई तरीका नही था।

उद्योग जगत के नेताओं के व्यवहार के बारे में क्या? क्या वे सचमुच घोटालों में लिप्त है? ऐसा लग रहा था कि बड़े पैमाने पर घोटाले हो रहे हैं। उनके व्यवसायिक निर्णयों मे देश के हितो की कितनी रक्षा होती है? यदि घोटाले सच थे तो क्या उद्योग और अर्थव्यवस्था सुरक्षित हाथों में है? क्या इसे सभी के लिए सामान्यीकृत किया जा सकता है? अच्छे लोगो को बुरे लोगों से अलग कैसे करें ? उन्हें क्या बुरा बनाता है ? क्या सरकारी निर्णय उन्हे ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित कर रहे है? और हम उनके तौर तरीके सुधारने के लिए क्या कार्यवाही करते है? यदि अदालतें उन्हे जेलों में ड़ालना शुरू कर दें तो सामाजिक जरूरतो की पूरा करने के लिए उद्योग कौन चलाएगा? मीड़िया के बारे में क्या? क्या यह जनता को सही तस्वीर दिखा रही है और अपनी जिम्मेदारी ठीक से निभा रही है? क्या न्यायपालिका चुनौतियों से तेजी से निपटने में सक्षम है? ऐसे प्रश्न मन की शांति को बुरी तरह से भंग करने लगे हैं।

एक दिन मैं सी0ए0जी वेबसाईट पर पहुँचा और कोयला ब्लाक आवंटन पर सी0ए0जी की रिपोर्ट देख सका। विश्लेषण से कारणों का पता चला, मतभेद सी0ए0जी0 द्वारा की गई कुछ धारणाओं के कारण थे जो मुझे लगा तर्कसंगत नही थें। मेरे विश्लेषण के अनुसार सरकारी खजाने को नुकसान सी0ए0जी0 के अनुमान से दोगुने से भी अधिक था। पेपर अप्रैल 2014 में एक सम्मेलन में भेजा गया था और यहाँ तक कि प्रधानमंत्री को भी भेजा गया था। जब उन्होने मई 2014 में जनता के लिए अपना पोर्टल खोला था। अगस्त 2014 में भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने मनमानी और अवैधता के आधार पर आवंटन को रद्द कर दिया और कहा नीलामी के लिए सभी ब्लाक न कि केवल वे जो सीएजी द्वारा बताए गये हैं शामिल किये जाए। जब नीलामी शुरू हुई तो मेरे अनुमान सही साबित होने लगें।

अगस्त 2013 के दौरान, संसद ने मल्टी–ब्रांड रिटेल (एमबीआर) व्यवसाय में एफडीआई पर चर्चा शुरू की। संसद में हंगामा मच गया, प्रधानमंत्री ने कहा कि यदि ऐसा नहीं किया गया, तो 1991 से भी बदतर आर्थिक आपातकाल होगा। वित्तमंत्री ने कहा कि एमबीआर में एफडीआई अब पसंद का नहीं बल्कि आवश्यकता का विषय है। इससे मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या 20 वर्षो के सुधारों के बाद हम वापस उसी या उससे भी बुरी स्थिति में हैं,क्या सुधार सही दिशा में चल रहे थे? आरबीआई और अन्य प्रामाणिक संसाधनों के गहन विश्लेषण से संकेत मिलता है कि यह एक वास्तविकता थी, कोई फर्जी कॉल नहीं। मुझे लगभग दिल का दौरा पड़ गया और मुझे चेक–अप के लिए

इमरजेन्सी में ले जाया गया। उपलब्ध जानकारी से यह भी संकेत मिलता है कि जो दिखता है उससे कहीं अधिक स्थिति खराब है। हवाला और मनी लॉन्ड्रिंग के आरोप सच हो सकते है। विश्रलेषण यह भी सोचने पर मजबूर करता है कि क्या सुधारों की पूरी प्रक्रिया पर नये सिरे से नजर डालने की जरूरत है। उपरोक्त दो पेपर और किंगफिशर एयरलाइंस और अदानी एंटरप्राइज लिमिटेड के दो मामलों के अध्ययन से संकेत मिलता है कि सेवानिवृत्त शिक्षाविद् हर समय चिल्लाने और रोने के बावजूद, बिस्तर से भी , डिजिटल युग में बहुत सारे सार्थक शोध कर सकते हैं, जो युवा संकाय सहकर्मियों के लिए समय की कमी के कारण करना मुश्किल हो सकता है।

पिछले 40 वर्षो के अपने शोध कार्य को याद करते हुए मुझे यह याद आया कि यद्यपि प्रत्येक शोध कार्य स्वंतत्र रूप से किया गया था और मुददो और मूल्यवान अनुशंसाओ में उपयोगी अंतर्दृष्टि प्रदान करता था। पूरे सेट का एक और उपयोग भी है, जो उदारीकरण के बाद के भारत में विकास की पूरी प्रक्रिया को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है अवसर जो हमने गँवा दिए, और यह विचार दिया कि हमें समस्त समस्याओं से उबरने के लिए क्या करने की आवश्यकता है, चाहे वह प्रदूषण हो या ट्रैफिक जाम या रोजगार रहित विकास और निवेश संकट हो। इसलिए पूरा सेट "पोस्ट लिबरलाइजेशन डेवलपमेंट्स इन इंडियाः ए 25 इयर्स रिसर्ज जर्नी" पुस्तक को पांच खण्डों के रूप में लाया जा रहा है।

शिक्षण / एमडीपी

आईआईएम कोझिकोड के निदेशक के रूप में मुझे ऑनलाइन पाठयक्रम संचालित करने का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करने का अवसर मिला जिसमें केस चर्चा आयोजित करना भी शामिल था, मैंने पाया कि यह भौतिक कक्षा कक्ष चर्चा की तरह ही सक्रिय और जीवंत था। मैनें अपनी रिपोर्ट के एक हिस्से के रूप में 6 नये आई आई एम स्थापित करने के लिये वीडियो कॉन्फ्रेसिंग सुविधाएं स्थापित करने की सिफारिश की थी। लेकिन इससे भी अधिक मुझे लगा कि नए आईआईएम और यहां तक कि पुराने आईआईएम भी अतिथि अंत से वीडियों कॉन्फ्रेंसिंग स्टूडियों के बिना दूरदराज के क्षेत्रों से नियमित कार्यकमों और एमडीपी प्रोग्रमों में अतिथि और कभी–कभार व्याख्यान आयोजित करके बहुत सा लाभ उठा सकते हैं। प्राद्योगिकि उपलब्ध है और मैं प्रयोग करने के लिए तैयार था। लेकिन मेरे प्रयास विफल रहे क्योंकि ऐसा लगता है कि प्रयास करने में भी पूरी तरह से विरोध रहा है। हमें बस इसे निर्बाध बनाना है, जो तब तक संभव नहीं है जब तक यह उपयोग में न आ जाए। संभावित लाभ, लागत में भारी कमी, समय की बचत आदि जो बिल्कुल भी प्राप्त नहीं हो रहे हैं जो कि बहुत बड़े लाभ हैं। यहां तक कि आईटी फैकल्टी भी इसके लिए तैयार नहीं है। यह तुरंत प्रयोग करने लायक है।
एमडीपी के लिए मैंने पाया कि पाठयक्रम सामग्री को मनोरंतन शीट में मिला देना (अगला भाग देखे) और ब्रेक अवधि में मनोरंजन के साथ बाधा मुक्त कक्षा संचालित करना बहुत उपयोगी था।

मनोरंजन

सेवानिवृत्त व्यक्तियों के लिए एक मनोरंजक वेबसाइट बनाने का विचार मेरे मन मे तब विकसित हुआ जब मैं बिस्तर तक ही सीमित था और समय गुजारना नहीं जानता था, क्योंकि चक्कर आने के कारण मैं हिल–डुल नहीं पाता था और अपनी दैनिक दिनचर्या के काम भी नहीं कर पाता था। मैने यूटयूब संगीत साइट पर जाना शुरू किया। मै अपने पसंदीदा गाने सुन सकता था। वहाँ प्रफुल्लित करने वाले चुटकुले, गजलें, हास्य कवि सम्मेलन और ऐसी ही चीजें थीं। मैन उन्हे एक एक्सेल शीट में अर्न्तनिहित किया और अपलोड किया। धीरे–धीरे जेन नेक्स्ट, बच्चो के लिए गाने, व्हाट्सएप के क्लिप भी जोड़े गए। मैने उन्हे अपने उद्देश्य के लिए अपलोड किया और जब भी मैं ऊब रहा होता था उदास नींद की कमी का समना करता था तो इसका आनंद लेता था। मैने इस उद्येश्य के लिए विभिन्न मोबाइल सेवा प्रदाताओं से कुछ जोड़ी इयरफोन, तीन वाईफाई / ब्रॉड बैंड डोंगल, स्पीकर के दो सेट, दो मोबाइल खरीदे। दो पुराने लैपटॉप ने भी इस प्रयास में सहायता की।

इसमें मैने विभिन्न शहरों में विभिन्न बीमारियों के लिए अपने डॉक्टरों के विवरण, विभिन्न स्थानों में फार्मासिस्टों के संपर्क नंबर, बैंक खाते के विवरण (लॉगिन के साथ), बुक किए गए टिकट के विवरण, टैक्सी नंबर और अन्य विवरण भी शामिल किए हैं जिनकी मुझे समय–समय पर आवश्यकता होती है। यह किट, एक बचत बैग की तरह मेरे सामान का अभिन्न अंग बन गयी। मेरा मानना है कि डिजिटल युग युवा पीढ़ी पर बोझा डाले बिना 65 + लोगों को आनंद देने का एक अनूठा अवसर प्रदान करता है।
इस प्रकार डिजिटल युग ने मुझे निम्नलिखित शैक्षणिक और गैर–शैक्षणिक योगदान के अवसर प्रदान किए :

1. आईआईएम को एकीकृत करना
2. बहुभाषी वेबसाइट के माध्यम से आईआईएम को दुनिया भर में फैलाना
3. 12 भाषाओं में बहुभाषी कहानियाँ तैयार करना।
4. लघु ज्ञान वर्धन प्रबन्ध कहानियाँ तैयार करना बैच 1 (1987)
5. अनुकूलित पुस्तकें तैयार करना (नीचे सम्बन्धित तस्वीरों पर क्लिक करें)
6. केस मेथड और केस राइटिंग के माध्यम से शिक्षण में मदद के लिए पुस्तक तैयार करना ।
7. कम लागत / निःशुल्क / लचीली केस बुक शुरू करना
8. कम लागत / मुफ्त सामग्री को जरूरतमंदों तक पहुँचाना जिससे रणनीतिक प्रबन्धन विषय को सरल तरीके से समझा जा सके।

9- अनुसंधान करना
अनुसंधान प्रसार

10 आई सी यू से पढ़ाना.

11. घर बैठे मनोरंजन

श्री नरेन्द्र मोदी	श्री प्रकाश जावेडकर	श्री राहुल गांधी	एम0 ईमैनुएल मैकरान	श्री मारियोनो रीजाएं	एन्जेला मर्केल
प्रधान मंत्री (भारत)	एम0एच0 आर0डी0 (भारत)	एम0पी0 (भारत)	राष्ट्रपति (फ्रांस)	प्रधान मंत्री (स्पेन)	चांसलर (जर्मनी)

आगे की चुनौतियाँ

प्रत्येक तकनीकी सफलता के साथ कुछ चुनौतियाँ भी जड़ी होती हैं जो चार मुख्य चुनौतियों में देख सका उनका वर्णन नीचे किया गया है:

1. **लागत कारकः** गतिशील अप्रचलन के कारण लागत पर अभूतपूर्व प्रभाव पड़ा। हर सेवानिवृत्त व्यक्ति शायद हर एक या दो साल में महंगे स्मार्टफोन और लैपटॉप खरीदने का जोखिम नहीं उठा सकता। इसके साथ उपरोक्त उद्देश्यों के लिए इण्टरनेट सेवा के शुल्क भी जुड़े हैं।
2. **अनिश्चतता**ः मोबाईल, लैपटॉप, प्रिंटर से जुड़ी अनिश्चितिता का स्तर न केवल गतिशील अप्रचलन के कारण बल्कि अनुकूलता समस्याओं के कारण भी है, जिस पर विश्वास करना बहुत अधिक है और कभी कभी , यहां तक कि कट्टर आशावादी को भी निराश कर सकता है।
3. **बड़ी उम्र में सीखना** :—एक ऐसा देश जहाँ जवान उम्र में सीखना कठिन है। वहाँ बुजुर्ग लोगों के लिए नयी टेक्नोलॉजी और इसके इस्तेमाल को सीखना आसान नहीं है, विशेष रूप से कम्प्यूटर और मोबाईल के 'नो नानसेन्स' हुक्म में। यदि किसी के घर में मदद के लिए युवा व्यक्ति नहीं है तो यह दुःस्वप्न हो सकता है। और बूढ़े व्यक्ति चुपचाप "आधुनिक चीजें सीखने के लिए मैं बहुत बूढ़ा हो गया हूँ" सिंड्रोम में वापस आ जाएगें।
4. **स्थिरता** : आखिरी लेकिन शायद सबसे महत्वपूर्ण उभरती हुई चुनौती आयात के बिना प्रौद्योगिकी की स्थिरता है। ऐसे देश के लिए जो आतंकवादी फंडिग की तमाम चुनौतियों का सामना करने के बावजूद करेंसी नोट छापने के लिए कागज और स्याही का उत्पादन नही कर सकता है। ऐसी टेक्नोलॉजी पर भरोसा करना जहाँ सभी महत्वपूर्ण घटक दुश्मन/मित्र देश से आयात किए जाते हैं। जहाँ उद्योगपति व्यापार और विस्तारित व्यापार के बार—बार विफल हो रहे हैं (जिसके कारण भारी एन0पी0ए0 हुआ) और बिना सोचे समझे ऐसा व्यवसाय करना जिसमें उनके पास शून्य अनुभव/विशेषज्ञता हो ओर बड़े ऋण भुगतान में डिफाल्ट कर रहे हों। आश्चर्य होता है कि नए उत्पादन विकास के घरेलू प्रयास के बिना ऐसी रणनीति कितनी सुरक्षित और सुदृढ़ है। यह नींव की मजबूती के बारे में आश्वस्त हुए बिना किसी इमारत की 21वीं मंजिल तैयार करने में खुश होने जैसा है?

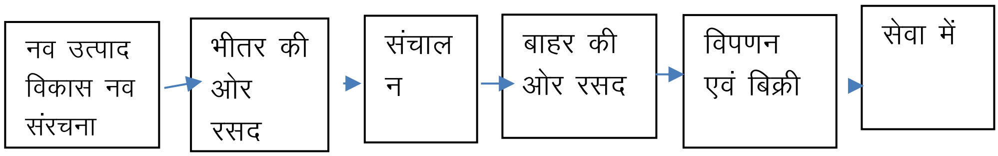

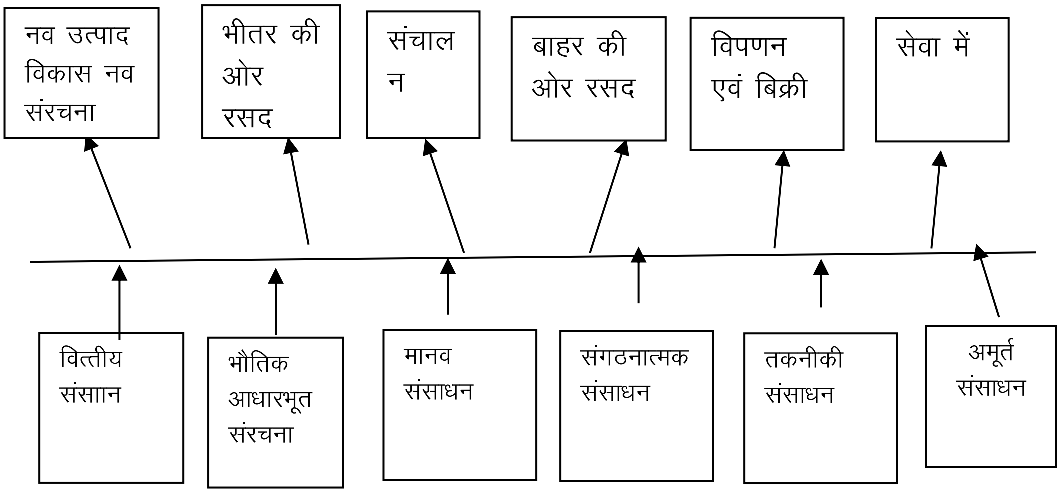

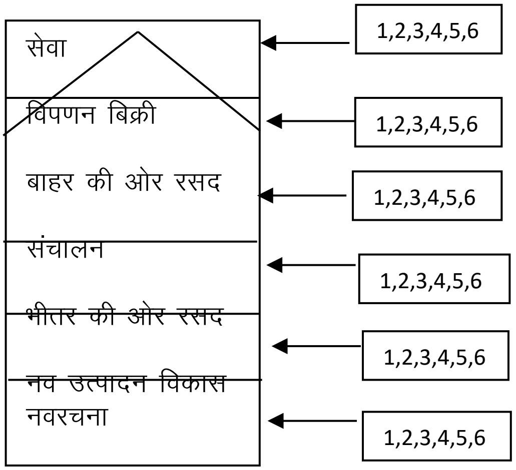

बिना ये जाने कि बुनियाद कितनी मजबूत है, 21 मंजिल की इमारत बनवाना (नकली नोटों का चलन याद करना जबकि हम 70 वर्षो के बावजूद भी इंक और पेपर नहीं बना सके।

विदेश से आयातित सर्किट एवं सिम्स् के साथ सुरक्षा जोखिम (जैसे डुप्लीकेट नोट प्रिन्टिंग)

18 साल पुराने कारोबार में गडबड़ी वाले व्यापारियों ने एयरपोर्ट मेट्रो का अनुबन्ध तोड़ दिया, बिजली उत्पादन कारोबार में गडबड़ी की, बैंकों में डिफाल्ट किया। परन्तु अब रक्षा अनुबन्ध के लिए विचाराधीन हैं।

अग्रणी मोबाईल सेवा प्रदाता ई0के0 वाई0सी0 और आधार वेरीफिकेशन के माध्यम से पे बैंक खातों ने अवैध तरीकों से सब्सीडीज का हस्तान्तरण करते हुए।

कम्पनी जिसने पेट्रोल का वितरण बन्द किया, के0जी0 बेसिन से लाभ को ध्यान में रखते हुए गैस की आपूर्ति बन्द की, एस0बी0आई0 के साथ पेमेन्ट बैंक के साथ पेपर बैंक का संयुक्त उपक्रम स्थापित किया (चीन) की जीओ टेक के सहयोग से।